# 21वीं सदी की हिंदी कहानी में स्त्री-पुरुष के अंतर्संबंधों की परख

सुरेश कुमार मीणा

पीएचडी हिंदी विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

**शोध सार**

हिंदी कहानी अपने आरंभ के दिनों से ही साहित्य में सामाजिक सरोकारों को प्रखरता से व्यक्त करती आई है। लेकिन 21वीं सदी में हिंदी कहानियों के बदलते स्वरूप को रेखांकित किया गया है। इसमें मानव जीवन के सबसे सूक्ष्म पहलुओं को अपनी विधा स्पष्टता और प्रभावशीलता के कारण कहानी ने न केवल एक समृद्ध परंपरा का निर्माण किया, बल्कि यह भी प्रमाणित किया की जीवन के तमाम विमर्शों को वह सशक्त रूप से उजागर कर सकती है। यही कारण है कि 21वीं सदी  की कहानियां न केवल अपना स्थान पा रही है बल्कि अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए आज के युग में नए सवाल भी खड़े कर रही है।

**बीज शब्द** – प्रेम-संबंध, अकेलापन, टूटन, संघर्ष, स्त्री-चेतना, और बाजारवाद ।

आज हम 21वीं सदी के दूसरे दशक में जी रहे हैं, और भारत की आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इसके बावजूद भी कई समस्याएं और ज्वलंत प्रश्न आज भी हमारे सामने चुनौती बनकर खड़े हैं। किसानो का शोषण, स्त्री शोषण और जातिवाद की समस्याएं तो पहले से ही समाज का हिस्सा थी, लेकिन भूमंडलीकरण के इस दौर में कई नई और जटिल समस्याएं उभरी है। इनमें संस्कृति का बाजारीकरण, कंप्यूटरी कृत व्यवस्था का विस्तार, सूचना तकनीक का जाल और इसके प्रभाव से युवाओं के शारीरिक और मानसिक शोषण जैसी समस्याएं शामिल है। आज की हिंदी कहानी ने इन नए सामाजिक मुद्दों को न केवल

स्थान दिया, बल्कि इन्हें मानवीय संवेदनाओं के स्तर पर उभारते हुए पाठको का ध्यान खींचने और उन्हें समाधान की दिशा में प्रेरित करने का प्रयास भी किया है।

21वीं सदी के हिंदी कहानीकारों ने जटिल होते मानवीय संबंधों, प्रेम जैसे संवेदनशील मनोभावों पर बाजार के प्रभाव, लोकतंत्र के चौथे स्तंभ माने जाने वाली मीडिया के नैतिक पतन, युवाओं में दिखावे की प्रवृत्ति, तथा यौन कुंठा जैसे विषयों को अपने लेखन का हिस्सा बनाया है। इन कहानियों ने न केवल कथ्य के स्तर पर बल्कि शिल्प के स्तर पर भी अपनी पूर्ववर्ती कहानियों से अलग पहचान बनाई है। 21वीं सदी की कहानियों में एक नया दृष्टिकोण और सामाजिक परिप्रेक्ष्य उभरता दिखाई देने लगता है। यें कहानीयां न केवल समाज की समस्याओं का दस्तावेज बनती है, बल्कि पाठकों को उन समस्याओं के प्रति जागरूक करने और समाधान की दिशा में सोचने के लिए भी प्रेरित करती है।

21वीं सदी की हिंदी कहानियों में बदलते सामाजिक परिवेश ने जिन सामाजिक जीवन मूल्यों को उत्पन्न किया है, वे मानवीय संबंधों को कई स्तरों पर प्रभावित कर रहे हैं। जिससे सामाजिक ढांचा तथा मानवीय संबंधों के स्वरूप में आधुनिक रूप में परिवर्तन आया है। राजेंद्र यादव के अनुसार "संबंधों के क्षेत्र में सबसे अधिक भीषण स्थितियों से गुजरना पड़ा है नारी और पुरुष के आपसी संबंधों को।"1 इस युग में औद्योगिकरण, नगरीकरण एवं भूमंडलीकरण ने जिस सामाजिक व्यवस्था को बनाया है उसने स्त्री और पुरुष के परंपरागत संबंधों के समीकरण को बदल दिया हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षित एवं सक्षम महिलाओं के दृष्टिकोण में बदलाव आया । वे परिवार व समाज में अपनी भूमिका को लेकर शारीरिक व मानसिक रूप से संघर्ष करती रहीं । स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद स्त्रियों के स्वरूप में होने वाले परिवर्तनों के संदर्भ में वीरेंद्र सिंह लिखते हैं "एक और जहां परिवार का परंपरागत स्वरूप टूटा, वहीं दूसरी ओर स्त्री स्वतंत्रता के कारण नवयुवक स्त्रियों के स्वरूप में परिवर्तन आया। जो स्त्रियां आजीविका के साधन स्वयं जुटाती थी उनकी मानसिकता में धीरे-धीरे परिवर्तन आया और इस प्रकार उन्होंने जीवन और चिंतन के स्तर पर पुरुषों के समान ही स्वयं को प्रस्तुत करने की कोशिश की।"2 स्पष्ट है कि आज के समय की स्त्री सतत संघर्ष करते हुए उसने स्वयं को पुरुष से मुक्त एक स्वतंत्र अस्तित्व माना है।

वर्तमान दौर के महानगरीय तथा आधुनिकता बोध के जीवन में विवाह और प्रेम संबंधी दृष्टिकोण आज पूरी तरह बदला हुआ है उसे मात्र एक सामाजिक समझौता समझा गया है। रमेश बक्षी की कहानी पिता- दर-पिता में "विवाह संस्था एक ऐसी विवशता बताई गई है, जिसे ढोने के लिए मनुष्य अभिशप्त है।"3

वर्तमान में 21वीं सदी की कहानियों में कई पुरुष वर्ग स्त्री की विवशता, स्थिति तथा मनचाही प्रगति का झांसा देकर उसका इस्तेमाल कर रहा है, तो स्त्री वर्ग में विशेष कर उच्च वर्ग की स्त्रियां अपने ऐश और आराम, देह सुख या मनोरंजन के लिए पुरुष का इस्तेमाल कर रही है। कुसुम अंसल ने अपनी कहानी 'इंतजार' में - ये स्त्रियां शोषण के साजिश चंगुल में फंसती चली जाती है और इससे उभरने वाली स्थितियों को स्वीकार कर लेती है। वे मन ही मन कहीं मुक्ति के लिए छटपटाती है। कहानी में किसी कार्यालय में काम करने वाली देविशा का पति विशाल चाहता है कि पत्नी सब कुछ देकर भी ऑफिस में तरक्की करें। वह यह जानकर भी उसे नहीं फटकारता की देविशा अपने बॉस मनुज गोस्वामी के साथ क्यों घूमने जाती है। उसने देविशा से कहा "मनुज गोस्वामी से अच्छी खासी दोस्ती है तुम्हारी… तुम समझती हो तो… अभी तक तुम्हारी तरक्की क्यों नहीं हुई… कुछ तो करना ही होगा।"4

भूमंडलीकरण के इस दौर में आजकल आत्मनिर्भर स्त्री-पुरुष अपने मनचाहे साथी के साथ जीवन यापन करना चाहते हैं, लेकिन कुछ हफ्तों – महीनों के बाद उनकी दैहिक और वासना परक इच्छाएं अपनी तृप्ति के लिए दूसरा पात्र चुन लेना चाहती है, तो अलगाव और नए तलाश के विकल्प खुल जाते हैं। प्रेम और वासना का बुखार उतर जाने के बाद यदि स्त्री-पुरुष के संबंधों में कुछ भावनात्मक लगाव शेष नहीं रह जाता है, तो वह एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, तीसरी के बाद चौथा संबंध तो स्त्री पुरुष के संबंध जैसा भी नहीं रह जाता। यदि ऐसा होगा तब अकेली स्त्री और अकेला पुरुष के पास तो स्मृतियाँ भी जीने लायक नहीं बचेगी।" 5 इस प्रकार 21वीं सदी की हिंदी कहानियों में स्त्री-पुरुष के संबंधों की कई कहानियों में स्त्रियां स्वेच्छा से यौन संबंध स्थापित करती हुई पुरुष वर्चस्व को नकारती है। इस दौर की कहानियां ने नए नैतिकता बोध को ग्रहण कर प्रेम विवाह और यौन संबंधों में एक खुली दृष्टि अपनाई है।

21वीं सदी की हिंदी कहानियों में स्त्री पुरुष संबंधों को अनेकों कहानियों के माध्यम से दर्शाया गया है जिसमें मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' इसमें जो पुरुष व स्त्री के संबंधों में प्रेम ग्रहण अनैतिक व नैतिक, स्वच्छ व झूठ तथा शुभ-अशुभ आज की जो परंपराएं परंपरागत धारणाएं रही हैं उससे अलग हटकर कहानी लिखी गई है। "जिसमें दीपा और निश्चित एवं संजय की प्रेम कहानी को दर्शाया गया है जहां दीपा की मनोदशा और द्वंद्व को इस कहानी के माध्यम से मन्नू भंडारी ने प्रदर्शित किया है।"6 कहानी में दीपा लगभग दो-तीन वर्ष पहले निश्चित की प्रेमिका होती है, जो एक झटके से उससे अलग हो जाती है। दीपा अब निश्चित से दूरी बना लेती है एवं घृणा भी करने लगती है वह अपने होने वाले पति संजय के साथ रहती है जहां दीपा और संजय कुछ समय में विवाह के बंधन में बनने वाले हैं

इस कहानी में दीपा और संजय तथा प्रेमी रहे निश्चित के बीच संबंध को मन्नू भंडारी ने एक भावनात्मक पूर्ण मिलन से बिछड़न को दिखाया है। जहां दीपा का भावनात्मक द्वंद भी नजर आता है। जहां उसे पहला प्यार भी अच्छा लगने लगता है साथ ही वर्तमान में संजय को भी याद करती है, यही इस कहानी में स्त्री के मनोभाव को प्रकट किया गया है। नारी के स्वभाव को समझने का प्रयास इस कहानी में मन्नू भंडारी ने किया है अतः 21वीं सदी के हिंदी साहित्य में स्त्री पुरुष संबंध में भाव और आत्मसम्मान को दर्शाया गया है।

हिंदी साहित्य की एक सशक्त कहानीकार उषा प्रियंवदा ने कहानियों के माध्यम से नगरीय जीवन पर प्रकाश डाला है "जिंदगी और गुलाब के फूल" इस कहानी में पारिवारिक रिश्तों में तनाव और बदलाव को देखा जाता है। हमारे समाज में आज भी धन का महत्व है। धन से ही मनुष्य की प्रतिष्ठा बनी रहती है, फिर समाज हो या घर। इस कहानी का सुबोध भी नौकरी करता था तो उसे घर और समाज में प्रतिष्ठा मिलती थी, नौकरी छोड़ देने के बाद सुबोध को प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान और आत्मीयता को भी खोना पड़ता है। यह कहानी समाज में विद्वान स्त्री-पुरुष संबंध के बीच पुरुष के जीवन में धन के महत्व को भी दर्शाती है। "जहां पुरुष का धनवान होना अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है वही स्त्री का केवल खूबसूरत मात्रा होना भी समाज के लिए स्त्री-पुरुष संबंध में एकरूपता प्रकट करने का प्रयास करता है।"7

राजेंद्र यादव ने अपनी कहानियों के विषय में नगरीय जीवन के मध्य वर्ग एवं निम्न मध्य वर्ग का चयन किया है। उन्होंने कहा है "व्यक्ति व्यक्ति के बीच जो कुछ तेजी से मर रहा है, बन और बदल रहा है, और 'नया' जन्म ले रहा है, उस सबको खोजना समझना और व्यक्त करना आज की कहानी की बहुत बड़ी विशेषता है।" 8 'टूटना' कहानी में लीना नामक युवती, वह स्वतंत्र अस्तित्व की इच्छा रखने वाली एक संपन्न एवं आभिजात्य परिवार की आधुनिक भारतीय स्त्री है। वह अपनी यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले एक निम्न मध्यवर्गीय आर्थिक रूप से असंपन्न परंतु मेहनती एवं कुशाग्र बुद्धि वाले लड़के किशोर से प्रेम करने लगती है। इस तरह अपने अनुभूत जीवन सत्य को अभिव्यंजित करते हुए लेखक ने अपने में डूबते- उतरते घुटन पीड़ा में ही जीते, अकेलेपन- खोखलेपन की समस्याओं से ग्रस्त व्यक्तियों के चित्र उकेरे हैं। आज के व्यक्ति के भीतर-बाहर घना शोर है, खामोशी है, घुटन और टूटन है, विषाद संघर्ष और असंतोष है। यह मात्र किसी एक व्यक्ति परिवार की कहानी नहीं है। आधुनिक स्त्री-पुरुष के दांपत्य संबंधों का यथार्थ प्रस्तुत करते हुए पुरुष के अंतर्मन की जटिल गुत्थियों, कुंठाओं को पकड़ने और उसे कहानी के माध्यम से सरलीकृत कर

प्रस्तुत करने की कोशिश की है। इस कहानी के माध्यम से यह बताया गया है कि किस तरह से स्त्री - पुरुष के संबंध  बदल रहे हैं, जो साथ ही परिवार के संबंधों को और पारिवारिक स्वरूप को भी बदल रहे है।

यशपाल जो एक प्रगतिवादी विचारधारा के लेखक है उन्होंने भी अपनी रचनाओं में एक शोषणहीन समाज की रचना उनके साहित्य का मुख्य विषय रहा है। स्त्री-पुरुष संबंधों में एक उन्मुक्त दृष्टि यशपाल की विशेषता है। "एक और यदि आर्यसमाजी जीवनदर्शन के परिणाम स्वरूप वे अकारण संयम की आत्मघाती प्रवृत्ति की तीखी आलोचना करते हैं तो दूसरी ओर प्रेम की शाश्वत और रोमानी अवधारणा का तिरस्कार करते हैं।"9 'तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूं' जैसी कहानियों में यशपाल एक ऐसी समाजवादी व्यवस्था चाहते हैं जहां स्त्री को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हो सके।

मन्नू भंडारी की 'ऊंचाई' कहानी की नायिका दांपत्य संबंध में शारीरिक पवित्रता मुद्दे को महत्वपूर्ण नहीं मानती। उसके लिए नैतिकता एवं अनैतिकता का प्रश्न प्रस्तुति के सापेक्ष है। वह अपने पूर्व प्रेमी से संबंध स्थापित कर उसे कोई ग्लानि नहीं होती। उसके लिए दांपत्य संबंध इतना ज्यादा पवित्र है कि सारे संसार की अपवित्रता भी इसमें आकर पवित्र हो जाती है।"10 इस दौर की कहानियां पारंपरिक सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करती है तथा स्त्री-पुरुष संबंध में समानता की मांग करती है।

आज की हिंदी कहानियों में बीते हुए कल के निर्णय का प्रभाव आने वाले कल की स्थितियों में अनिवार्य रूप से दिखाई देता है। 20वीं सदी के अंतिम दशक में जब भारत ने मुक्त व्यापार और उदारीकरण की राह बनाई तो समाज और संस्कृति पर बाजार का प्रभाव तेजी से बढ़ने लगा। इस प्रभाव को पंकज सुबीर ने अपनी कहानी 'सदी का महानायक उर्फ कूल-कूल तेल का सेल्समेन' में अत्यंत सूक्ष्मता और गहनता के साथ चित्रित किया है। यह कहानी बाजारवाद के बढ़ते दायरे को उजागर करते हुए यह दिखाती है कि कैसे बाजार ने प्रेम, रिश्तों और मानवीय संवेदनाओं को अपने अधीन कर लिया है। "बाजार में धीरे-धीरे उन सभी कहावतों और मुहावरों के अर्थ सीख लिए हैं जो प्यार, प्रेम और संस्कृति से जुड़ी हैं तभी तो बाजार धीरे-धीरे उन सभी रिश्तों में समा रहे हैं।"11

इसमें दिखाया गया है कि बाजार ने किस प्रकार हमारे संबंधों को वस्तुवादी बना दिया है। जैसे हम देखते हैं कि जब कोई अपनी प्रेमिका से कहता है, कि मैं तुम्हारे लिए आसमान से तारे तोड़कर ला सकता हूं तो बाजार तुरंत हस्तक्षेप करता है और कहता है "तारों को तोड़ने की जरूरत नहीं यह देखो हमारा नया फोन और यह आज के समय किसी आसमान के तारे से कम नहीं है इसे खरीदो और उसे दे दो यही उसके

लिए सबसे बड़ा उपहार है।”12 इसके माध्यम से आज के समय में किस प्रकार बाजार ने किस हद तक हमारी सोच, भावनाओं और रिश्तो को प्रभावित किया है। आज बाजार यह तय करता है कि हम क्या खाएं, क्या पहने, कहां जाए, यहाँ तक कि अपने समाज में अपनों के प्रति कैसा भाव व्यक्त करें।

जीवन के बदलते मानव-मूल्यों के संदर्भ में 21 वीं सदी की हिंदी कहानियों ने युग सत्य को इस तरह व्यक्त किया है, यह विचारणीय है। इसके लिए कहानीकारों के मन में कम से कम वे समस्याएं जरूर उठनी चाहिए, जो आने वाले कल का आभास दे सके। “ किसी पुरानी इमारत को ढहते देखना सत्य का एक अंश है, पर पूर्ण सत्य वह तभी होगा, जब हम इसको भी देख सके कि ढह जाने के बाद आखिर उस जगह नींव कैसे होगी और खड़े होने वाले ढांचे का प्रारूप क्या होगा।”13

इस प्रकार हम 21वीं सदी की हिंदी कहानियों में यह देखते है कि युग और परिवेश के बदलाव से मनुष्य की संवेदनशीलता में बदलाव आया है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक क्षेत्र की भौतिक और बौद्धिक उपलब्धियां ने जीवन विषयक स्थापित मान्यताओं को तोड़ दिया है। स्त्री एवं पुरुष के संबंधों में परिवर्तन के पीछे एक प्रमुख कारण नारी का अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक होना, पुनर्जागरण देश के स्वाधीनता संग्राम एवं स्वतंत्रता के बाद भारत में स्त्रियों के लिए बनाए गए अनेक प्रभारी कानून एवं सुधार कार्यक्रमों ने स्त्रियों को न केवल आत्मनिर्भर बनाया, बल्कि उनके अंदर आत्मविश्वास भी उत्पन्न किया है। समाज में आ रहे इस परिवर्तन को साहित्य में भी परिलक्षित किया है। हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में यदि हम दृष्टि डालेंगे तो पाएंगे कि स्त्री-पुरुष संबंधों के विभिन्न पहलुओं को रचनाकारों ने अपने-अपने तरह से स्थापित करने का प्रयास किया है। व्यक्तिक पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था से संबंधित मानवीय भावनाओं का स्वरूप अब वह नहीं है, जो पिछले समय या युग में रहा था। इस काल में अब स्त्री-पुरुष संबंध, सामाजिक संवेदनशील भाव, उचित-अनुचित और नैतिक-अनैतिक के विषय में नया बौद्ध विकसित हो रहा है।

## संदर्भ सूची


1. यादव राजेंद्र, एक दुनिया समानांतर, प्रकाशन राधाकृष्ण, संस्करण 2022, पृ. सं. 32
2. डॉ यादव वीरेंद्र सिंह, हिंदी कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन, प्रकाशन नमन, संस्करण 2010, पृ. सं. 62
3. बक्षी रमेश, कहानी : पिता-दर-पिता, प्रकाशन हिंदी बुक पॉकेट, संस्करण 2020, पृ. सं. 24

4. अंसल कुसुम, कहानी : इंतजार : स्पीड ब्रेकर, प्रकाशन प्रभात, संस्करण 2017 पृ. सं. 37
5. राणावत कीर्ति उषा, स्त्री-पुरुषों के संबंधों का विमर्श, पृ. सं. 20
6. भंडारी मन्नू, कहानी : यही सच है, प्रकाशन राधाकृष्ण, संस्करण 1997, पृ. सं. 10, 55
7. प्रियंवदा उषा, कहानी : जिंदगी और गुलाब के फूल, प्रकाशन राजकमल, संस्करण 2024, पृ. सं. 20, 25
8. यादव राजेंद्र, एक दुनिया समानांतर 'टूटना' प्रकाशन राधाकृष्ण, संस्करण 2022, पृ. सं. 300
9. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, प्रकाशन लोकभारती, संस्करण 2014, पृ. सं. 50
10. भंडारी मन्नू, मेरी प्रिय कहानियाँ, प्रकाशन राजपाल दिल्ली, संस्करण 1986, पृ. सं. 138
11. सुबीर पंकज, कहानी : सदी का महानायक उर्फ कूल-कूल तेल का सेल्समेन, हंस 2010 दिसंबर, पृ. सं. 21
12. सुबीर पंकज, कहानी : सदी का महानायक उर्फ कूल-कूल तेल का सेल्समेन, पृ. सं. 24
13. अवस्थी देवीशंकर, नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति, प्रकाशन राजकमल, संस्करण 2010, पृ. सं. 65